दिनांक 6/5/2020
डा० शिवानन्द झा
दर्शनशास्त्र
आर० एन० कॉलेज
पंडौल.

B.A. (H) – 1 (6)

सांख्य-दर्शन

प्रकृति और उसके गुण

भारतीय दर्शन के सबसे प्राचीन वेदान्त-दर्शन के बाद सबसे महत्वपूर्ण सांख्य-दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल माने जाते हैं। द्वैतवादी सांख्य दर्शन के अनुसार परम सत्ताएँ दो हैं। जिनमें एक को प्रकृति और दूसरी को पुरुष कहा जाता है। प्रकृति और पुरुष एक दूसरे के प्रतिकूल हैं। सम्पूर्ण विश्व की ओर गहन दृष्टि देने पर पाते हैं कि विश्व में उपस्थित वस्तु के बीच कार्य का प्रवाह है। स्वतः प्रश्न आता है कि विश्वरूपी कार्य-श्रृंखला के प्रवाह कुछ न कुछ कारण अवश्य है। विश्व का कारण पुरुष को नहीं माना जा सकता है कि क्योंकि पुरुष कार्यकारण श्रृंखला से मुक्त है। सांख्य दर्शन विभिन्न दर्शनों, चार्वाक, बुद्ध, न्याय-वैशेषिक और मीमांसा तथा अद्वैत वेदान्त के मत का विरोध करते हुए विश्व की कार्य श्रृंखला का कारण मानने के लिए प्रकृति की स्थापना करता है। प्रकृति एक है: इसलिए उससे विश्व की व्यवस्था की व्याख्या हो जाती है। प्रकृति सम्पूर्ण विश्व की जिसमें स्थूल एवं सूक्ष्म पदार्थ हैं, व्याख्या करने में समर्थ है। प्रकृति को प्रकृति इसलिए कहा जाता है कि यह विश्व का मूल कारण है; परन्तु स्वयं कारणहीन है। सांख्य दो तत्वों की सत्ता स्वीकार करता है। जिसमें पहला तत्व प्रकृति है। प्रकृति को प्रकृति के अतिरिक्त विभिन्न गुणों के कारण विभिन्न नामों, प्रधान, अव्यक्त, ब्रह्मा, जड़, माया, शक्ति, से सांख्य दर्शन में सम्बोधित किया गया है जो अदृश्य, अनन्त, अचेतन, व्यक्तिहीन एवं शाश्वत है। प्रकृति विश्व की विभिन्न वस्तुओं का कारण है, परन्तु स्वयं अकारण है। सांख्य-दर्शन मानती है कि प्रकृति दिक् और काल में नहीं है, बल्कि यह दिक् और काल को जन्म देती है।

सांख्य-दर्शन ने प्रकृति को प्रमाणित करने के लिए अनेक तर्कों का सहारा लिया

ता. 6/5/..

25 (2)

2

सांख्य - दर्शन
प्रकृति

है। जिनसे प्रकृति की सत्ता का प्रमाण कहा जाता है! ये हैं:

(1). विश्व की सीमित, परतंत्र एवं सापेक्ष वस्तुओं के कारण ऐसी सत्ता होनी चाहिए जो स्वतंत्र, असीम तथा निरपेक्ष हो। यह सत्ता प्रकृति ही है।

(2) जगत की वस्तुओं का कारण एक ऐसा पदार्थ है जिसमें सुख-दुःख और उदासीनता का भाव वर्तमान है। यह कारण प्रकृति है।

(3) विश्वरूपी कार्य का कारण एक ऐसी वस्तु को होना चाहिए जिसमें सम्पूर्ण विश्व अव्यक्त रूप में निहित हो। वह कारण प्रकृति है।

4 विश्व की वस्तुएँ भिन्न-2 हैं फिर भी सीमाहित हैं इनका सीमाहित होना एक मूल कारण की ओर संकेत करता है। वह कारण प्रकृति है।

5. विश्व एक कार्य है जिसका कारण किसी पदार्थ को मानने पर अनवस्था दोष पाये जाने के डर का सामना करना पड़ेगा। इससे बचने के लिए आवश्यक है कि विश्व का कारण एक ऐसी वस्तु को माना जाए, जो स्वयं कारणहीन हो। यह अकारण वस्तु जो विश्व का कारण है, प्रकृति है।

(6) कारण-कार्य में तादात्म्य संबंध होता है। सृष्टि के समय कारण से कार्य का निर्माण होता है और प्रलय के समय कार्य कारण में विलीन हो जाते हैं! यह सृष्टि और प्रलय का कारण प्रकृति है। प्रकृति से ही सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि होती है और प्रलयकाल में विश्व की समस्त वस्तुएँ प्रकृति में आकर मिल जाती है।

यद्यपि प्रकृति एक है फिर भी इसका स्वरूप जटिल है। प्रकृति का विश्लेषण करने से इसमें तीन प्रकार के गुण पाये जाते हैं। ये तीन गुण हैं - सत्व, रजस और तमस। ये गुण प्रकृति की सत्ता का निर्माण करते हैं। गुणों के अभाव में प्रकृति की कल्पना करना असम्भव है।

Scanned with CamScanner

ता. 6/5/2020

प्रकृति

सत्यत: तीनों गुणों के साम्यावस्था को ही प्रकृति कहा जाता है। इसलिए प्रकृति को त्रिगुणमयी कहा गया है। इन गुणों में सत्व गुण ज्ञान के प्रतीक है। यह स्वयं प्रकाशित रहते हुए दूसरे को भी प्रकाशित करता है। सभी प्रकार के सुखानुभूति जैसे हर्ष, उल्लास, तृप्ति आदि सत्व के कारण है। रजस गुण क्रिया प्रेरक है। यह स्वयं चलायमान रहते हुए वस्तुओं को भी उत्तेजित करता है। इसका रंग लाल है। सत्व और तमस व्यक्तिगत रूप से निष्क्रिय है। रजस के प्रभाव में आकर ही वे सक्रिय हो जाते हैं। यह दुःख का कारण है। तमस गुण अज्ञान तथा अंधकार का प्रतीक है। यह सत्व का प्रतिकूल है। इसका रंग काला होता है। तमस गुण के फलस्वरूप मनुष्य में आलस्य का और निष्क्रियता का बढ़ावा होता है।

प्रकृति की तरह विश्व की समस्त वस्तुओं को त्रिगुणात्मक कहा जाता है। सभी गुण समान मात्रा में नहीं होते हैं। नाना रूपात्मक जगत की व्याख्या एक गुण से करना समुचित कठिन है। दो गुण मानने में एक दूसरे के कार्यों का खण्डन करता। गुणों की संख्या तीन मानने से संसार की विभिन्नता की व्याख्या हो जाती है। द्वैतवादी सांख्य दर्शन में प्रकृति के विरुद्ध कुछ आपत्तियों को दर्शायी गई है कि सांख्य ने प्रकृति को निरपेक्ष तथा स्वतंत्र माना है लेकिन एक प्रकृति सृष्टि कार्य में पुरुष के सहयोग की निर्भरता है तब निरपेक्षता भ्रान्ति है।

सांख्य ने प्रकृति को व्यक्तिशून्य कहा है जिसमें विरोधाभास है। फिर प्रकृति को अचेतन माना गया है जिससे विश्व की विविधता की व्याख्या में त्रुटि दीखती है। प्रकृति को सक्रिय मानने पर कर्म सिद्धान्त का खण्डन होता है। फिर भी सांख्य का प्रकृति संबंधी विचार उपयोगी एवं प्रभावी है।

Scanned with CamScanner